जीवन में संयम आव-यकः आचार्यश्री महाश्रमण
आमेट में मर्यादा महोत्सव का अंतिम दिन
सेलागुडा के लिए किया विहार

आमेटः 5 फरवरी

तेरापंथ धर्म संघ के 11वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने संयम से जीवन अलौकिक को परिभाशित करते हुए कहा कि व्यक्ति को अपना जीवन सदैव संयम के प्रति सजग रखने की आवश्यकता है। इससे स्वयं और समाज का विकास होगा और देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा। आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां अहिंसा समवसरण में 21 दिवसीय मर्यादा महोत्सव के अंतिम दिन रविवार को श्रावक समाज को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि जब व्यक्ति के जीवन में धर्म का थोडा सा अंश आता है तब उसका उद्धार हो जाता है। जब व्यक्ति अणुव्रत के सिद्धांतों को स्वीकार कर लेता है तो वह जीवन में संयम को स्वीकार कर लेता है। आचार्य तुलसी की ओर से प्रदत्त अणुव्रत को स्वीकार करने से व्यक्ति अपने जीवन में अच्छा परिवर्तन महसूस करता है। यह हमें जिन्दगी का निर्वाह किस तरह से किया जाए, यह सिखाता है। प्रत्येक व्यक्ति के मन में संयम का भाव जाग जाए तो शांति की बात सार्थक हो सकती है। सभी देशों में परस्पर वैमनस्य न हो, इसके प्रति जागरुकता रहनी चाहिए। उन्होंने व्यक्ति में नैतिकता की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि उसे अपने जीवन में वीतरागता का विकास करना चाहिए। जो व्यक्ति स्थिर चित्त वाला होता है वह भावना का विकास करता है। चित्त मजबूती का परिचायक हैं। जो व्यक्ति इसे धारण करता है वह आत्मा का दिग्दर्शन करता है। जिस मनुष्य में राग और द्वेष की भावना नहीं है उसे स्थिर चित्त की प्राप्ति होती है और जो राग-द्वेष से परिपूर्ण होता है उसे स्थिर की चित्त का आभास नहीं होता। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को अपने जीवन में भक्ति साधना का प्रयोग करने की आवश्यकता है। यह भक्ति भगवान और अपने आराध्य के प्रति हो सकती है। जो व्यक्ति अपने स्वरूप का अनुसंधान करता है उसे मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। भक्ति मन में व्याप्त अनेक प्रकार के विकारों को दूर करने का सशक्त माध्यम है। आचार्यश्री ने कहा कि जीवन का मूल अर्थ साधना है। हमारा जीवन संयमित है तो हम आत्मा की अनुभूति को प्राप्त कर सकते है। व्यक्ति के जीवन में संयम, क्रोध पर नियंत्रण और अहंकार की भावना नहीं है तो हम अनेक समस्याओं का बखूबी सामना कर सकते है। उन्होंने कहा कि नशामुक्ति अभियान से कितने के जीवन में सुधार होगा। इसका अंदाजा स्वतः ही लगाया जा सकता है। उन्होंने मर्यादा महोत्सव की सफलता को लेकर कहा कि यहां बाहर से समागत लोगों के लिए हर तरह की

सुविधाओं की व्यवस्था करना बहुत महत्वपूर्ण काम था। इसे आमेट के लोगों और चातुर्मास व्यवस्था समिति के लोगों ने बिना किसी रुकावट के सुलभ कराया। कार्यकर्ता अपने कर्तव्य के प्रति पूरी तरह से समर्पित रहे। व्यवस्था समिति के संयोजक धर्मचंद खाब्या ने आभार व्यक्त किया।

वन्दें गुरुवरम् से गूंजा आमेट

मर्यादा महोत्सव की समाप्ति के बाद तेरापंथ धर्म संघ के 11 वें अधिशास्ता आचार्य महाश्रमण का विहार, उमडी जन मैदिनी

आमेटः 5 फरवरी

मेवाड अंचल के महत्वपूर्ण स्थल आमेट में 21 दिवसीय मर्यादा महोत्सव की समाप्ति के बाद हृदय सम्राट व शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण ने अपनी धवल सेना के साथ सेलागुडा के लिए विहार किया। अंचल के लगभग सभी गांवों और देश के अनके प्रांतों से समागत अपार जनमैदिनी की मौजूदगी में इस विहार के दौरान आमेट वंदें गुरुवरम् के गगनभेदी जयघोश से गूंज उठा।

यहां तेरापंथ भवन से आचार्यश्री महाश्रमण के बाहर आते ही हजारों की तादाद में उपस्थित श्रावक समाज एवं ग्रामवासियों में उनकी एक झलक पाने की होड सी मच गई। श्रावक समाज और युवाओं की टोलियों ने ओम अर्हम और वंदें गुरुवरम् के जय घोष से वातावरण को धर्ममय बना दिया।

आचार्य के साथ श्रावक भी पैदलः आचार्यश्री के आमेट से सेलागुडा के लिए विहार के दौरान देश के विभिन्न राज्यों और मेवाड अंचल से आए श्रावक भी पूज्यप्रवर के साथ पदयात्रा करते हुए सेलागुडा गांव पहुंचे। मार्ग में लोगों ने आचार्यश्री के प्रति समाजजनों में इतनी आस्था देखकर दांतों तले अपनी अंगुलिया दबा ली।

सडकों पर तिल रखने की जगह नहींः आचार्यश्री के विहार के दौरान तेरापंथ समवसरण के बाहर दोपहर 2.40 बजे सडक पर तिल रखने तक की जगह नहीं थी। लोग सडकों के किनारे, मकान की छत और दुकानों पर खडे रहकर अपने आचार्य प्रवर को विदाई देते नजर आए। उनके मन में बस एक ही इच्छा थी कि अब भविष्य में न जाने कब आचार्यश्री के दर्शन का लाभ मिल सके। वे इस अविस्मरणीय क्षण को किसी तरह खोना नहीं चाहते थे।

व्यवस्थाओं ने लगाए चार चांदः आचार्यश्री के विहार को लेकर व्यवस्था समिति की ओर से की गई व्यवस्थाओं को लेकर बाहर से आए श्रावक संतुष्ठ नजर आए। उन्हें किसी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पडा। समिति की ओर से व्यवस्था का जिम्मा युवा कार्यकर्ताओं ने संभाल रखा था। इस दौरान व्यवस्था समिति संयोजक धर्मचंद खाब्या, सह संयोजक सलील लोढा, कोशाध्यक्ष मनसुख गेलडा, ज्ञाने-वर मेहता, दलीचंद कच्छारा, आवास व्यवस्था समिति के संयोजक अ-ोक गेलडा,

बाबूलाल गांधी, तेरापंथ युवक परिशद के अध्यक्ष प्रवीण ओस्तवाल, महावीर हिरण, संतोश भण्डारी, दीपक कोठारी, संजय बोहरा, संदीप हिंगड, महिला मंडल अध्यक्ष मंजू गेलडा, मंत्री रेणु छाजेड, कोशाध्यक्ष मीना गेलडा, कन्या मंडल की ममता पीतलिया, स्वीटी दक, खु-ाबू गेलडा, तेरापंथी सभा अध्यक्ष कन्हैयालाल कच्छारा, तेजप्रका-ा कोठारी, इन्द्रमल गेलडा, -ांतिलाल बाफना आदि मौजूद थे।

संलग्न फोटो का कैप-नः अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सूरज बरडिया का स्मृतिचिंह प्रदान कर स्वागत करतीं आमेट मंडल की पदाधिकारी।